

भाकृअनुप-केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

कपास की खेती के लिए ८ से १२ अक्टूबर, २०१५ साप्ताहिक सलाह
(४७ वां मानक सप्ताह)

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

राज्य/जिला	अक्टूबर, २०१५ माह में वर्षा की स्थिति (मि.मी)							साप्ताहिक परामर्श
दिनांक	6	7	8	9	10	11	12	
पंजाब								<p>फसल परिपक्वावस्था में है। <i>जी.आर्बोरियम</i> में सभी स्थलों पर तथा <i>जी.हिर्मुटम</i> में कुछ स्थलों पर कपास चुनाई का कार्य चल रहा है। देसी तथा अमेरिकन कपास को एक साथ न मिलाएँ। जिन किसानों ने देसी कपास लगाई है वे अगले वर्ष देसी का बीज प्रयोग करना चाहेंगे। जैसिड तथा फूलकीट की संख्या बहुत ही कम है। सफेदमक्खी की संख्या बढ़ रही है तथा इसकी संख्या अपने दूसरे शीर्ष पर इसी सप्ताह पहुँच सकती है। किसान भाई इसके नियंत्रण के लिए आवश्यकतानुसार डायफेथ्यूरान या इथिआन का छिड़काव करें। देसी कपास में कुछ स्थानों पर धब्बेदार सूँड़ी का प्रकोप दिखाई दे रहा है। कपास के अनेकों खेतों में मिलीबग का प्रकोप भी दर्ज किया गया है। इन खेतों से कपास की लकड़ियाँ उखाड़ते व नष्ट करते समय सावधानी बरतें। किसान भाई साफ-सुथरी कपास चुनें। बाजार में अच्छा भाव लेने के लिए साफ-सुथरी कपास चुनकर सुखा लें। चुनाई प्रत्येक 8 से 10 दिनों के अंतराल पर करें। खेतों में अधिकांश किस्मों/संकरों में पत्ती मोड़क विषाणु का प्रादुर्भाव बढ़ रहा है। वर्षा के बाद लालपत्ती रोग देखा जा रहा है। इसके प्रबंधन के लिए 1.0 % मेग्नीशियम सल्फेट का छिड़काव करें। पहेली फसल में अपेक्षाकृत निचली पतियों पर काली फफूँद देखी जा रही है। सभी खेतों में जैसिड की संख्या आर्थिक हानि की सीमा से कम है। <i>स्पोडोप्टेरा</i> तथा <i>सोलेनोप्सिस</i> मिलीबाग का प्रकोप नाममात्र का है। <i>हेलिकोवर्पा</i> तथा <i>एरियास</i> प्रजाति का प्रकोप भी नाममात्र को कुछ स्थलों पर कुछ खेतों में देसी कपास में दर्ज किया गया है। हिसार, सिरसा, फतेहाबाद, जिंद तथा भिवानी जिलों में कपास पत्ती मोड़क विषाणु का प्रकोप 3 ग्रेड हानि स्तर पर रिकार्ड किया गया है। जीवाणु पत्ती गलन रोग कपास पर नहीं देखा गया है। कुछ खेतों में फफूँदजनित रोगों का प्रकोप बहुत कम पाया गया है। खेत में एक-तिहाई गूलर खुलने के बाद सिंचाई न करें। सड़े हुए गुलरों से कपास नहीं चुनें। सूक्ष्मजीवों के कपास में संक्रमण से बचने के लिए कपास को भण्डारण से पहले सुखा लें। राजस्थान में फसल पुष्पन और गूलर खुलने की अवस्था में है। सनवा घास (<i>इकाइनोक्लोआ</i> प्रजाति), मोथा (<i>सायपेरस</i> प्रजाति), दूब घास (<i>सायनोडन</i> प्रजाति) तथा सांथी (<i>ट्रायेंथेमा</i> प्रजाति) खरपतवार मुख्यतः कपास के खेतों में पाई गई है।</p>
भटिंडा	0	0	0	0	0	0	0	
फिरोजपुर	0	0	0	0	0	0	0	
मुक्तसर	0	0	0	0	0	0	0	
मानसा	0	0	0	0	0	0	0	
हरियाणा								
सिरसा	0	0	0	0	0	0	0	
हिसार	0	0	0	0	0	0	0	
फतेहाबाद	0	0	0	0	0	0	0	
राजस्थान								
हनुमानगढ़	0	0	0	0	0	0	0	
श्रीगंगानगर	0	0	0	0	0	0	0	
बांसावाड़ा	0	0	0	0	0	0	0	
उड़ीसा								<p>फसल गूलर विकास तथा परिपक्वावस्था में है। रस चूसक कीटों, <i>स्पोडोप्टेरा</i> तथा गूलर की सूँड़ियों का प्रकोप देखा जा रहा है। लेकिन सिर्फ जैसिड की संख्या आर्थिक हानि स्तर से ऊपर दर्ज की गई है। कुछ छुटपुट स्थलों पर जीवाणु करपा का प्रकोप देखा गया है। रस चूसक कीटों की संख्या के नियंत्रण के लिए बुप्रोफेजिन अथवा डायफेथ्यूरान का छिड़काव करें। परिशिष्ट में दिए गए अनुशंसित उपायों से मुरझान तथा लाल पत्ती रोग की समस्या से निपटें। शीर्ष पुष्पन तथा गूलर निर्माण अवस्था में डी.ए.पी. तथा सूक्ष्म पोषकतत्वों के अनुप्रयोग से अधिक उपज लेने के लिए फसल में अधिक</p>
कोरापुट	10	3	0	0	0	0	0	
कालाहांडी	6	0	0	0	0	0	0	
बोलांगीर	0	0	0	0	0	0	0	

								गूलर धारण में मदद मिलेगी। कपास की दो कतारों के मध्य आडी में बनाकर वर्षाजल को संरक्षित करें।
गुजरात								<p>फसल पुष्पन, कली तथा गूलर निर्माण अवस्था में है। फसल की सेहत अच्छी है। एफिड, सफेदमक्खी, फूलकीटों की संख्या आर्थिक हानि सीमा से कम दर्ज की गई है। जैसिड संख्या (9-22/3 पतियां/पौधा) आर्थिक हानि सीमा से अधिक रिपोर्ट की गई है। मिलीबग (0-1 ग्रेड/ पौधा) तथा मिरिडबग (1 से 2/शीर्ष 5 कलियां) आर्थिक हानि स्तर से कम पाए गए हैं। एल्टरनेरिया पत्ती धब्बा तथा जीवाणु करपा का प्रकोप नाममात्र देखा गया है।</p> <p>गुलाबी सूँडी : गुलाबी सूँडी का प्रकोप कुछ खेतों में बीटी कपास में आर्थिक हानि स्तर से कम पाया गया है। इस सूँडी का प्रकोप सितम्बर के अंतिम सप्ताह से प्रारंभ होकर अक्टूबर के अंत तक हानि पहुँचने के स्तर तक पहुँच जाएगा जो नवंबर-दिसंबर तक और बढ़ेगा। किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि इसके पतंग के निरीक्षण का लिए फसल में 5-6 फिरोमोन ट्रेप/रात्रि सतत 3 रात्रि तक आने की आर्थिक हानि संख्या पहुँचने अथवा 10% क्षतिग्रस्त हरे गूलरों में छोटी सूँडी पाए जाने पर क्वीनालफास अथवा थायोडीकार्ब का छिड़काव एक बार अक्टूबर में तथा पायरेथाइड विषेशरूप से लैंबडा-सायहेलोथिन का छिड़काव एक बार नवंबर में करें। थायोडिकार्ब का एक से अधिक बार छिड़काव करने पर बारानी खेतों में लाल पत्ती रोग की समस्या बढ़ सकती है। इस सूँडी का नियंत्रण नहीं करने पर अक्टूबर-नवंबर में यह सूँडी भारी नुकसान पहुँचा सकती है। अक्टूबर के अंत तक किसी भी हालत में पायरेथाइड का छिड़काव न करें। कीटनाशक-मिश्रणों का भी अनुप्रयोग कभी नहीं करें। ऐसा करने से सफेद मक्खी की संख्या बढ़ सकती है। किसान भाई फसल को दिसंबर तक ही समाप्त कर दें। ऐसा करना गुलाबी सूँडी का प्रकोप कम करने तथा गूलर कि सूँडियों में बीटी कपास के लिए प्रतिरोधकता विकास को टालने के लिए आवश्यक है। पिछले वर्ष की कपास की लकड़ियाँ कुछ खेतों की मेंड पर रखी देखी जा रही हैं। इन्हें तुरन्त नष्ट कर दें। कपास का घर अथवा भण्डार में रखा पुराना बीज गुलाबी सूँडी के पतंग का स्रोत बन सकता है। यदि यह बीज क्षतिग्रस्त है तो इसे तुरन्त नष्ट कर दें।</p>
अमरेली	0	0	0	0	0	0	0	
भावनगर	0	0	0	0	0	0	0	
जामनगर	0	0	0	0	0	0	0	
राजकोट	0	0	0	0	0	0	0	
भरुच	0	0	0	0	0	0	0	
सबरकांठा	0	0	0	0	0	0	0	
सुरेन्द्रनगर	0	0	0	0	0	0	0	
अहमदाबाद	0	0	0	0	0	0	0	
वडोदरा	0	0	0	0	0	0	0	
पाटन	0	0	0	0	0	0	0	
मेहसाणा	0	0	0	0	0	0	0	
मध्यप्रदेश								
खरगोन	0	0	0	0	0	0	0	
धार	0	0	0	0	0	0	0	
खंडवा	0	0	0	0	0	0	0	
महाराष्ट्र								
नागपुर	0	0	0	0	0	0	0	
वर्धा	0	0	0	0	0	0	0	
चंद्रपुर	0	0	0	0	0	0	0	
यवतमाल	0	0	0	0	0	0	0	
अमरावती	0	0	0	0	0	0	0	
अकोला	0	0	0	0	0	0	0	
बुलढाना	0	0	0	0	0	0	0	
परभणी	0	0	0	0	0	0	0	
नांदेड	0	0	0	0	0	0	0	
बीड	0	0	0	0	0	0	0	

वासिम	0	0	0	0	0	0	0	पर्याप्त होने पर इस अवस्था में डी.ए.पी. का अनुप्रयोग करें। इससे अधिक उपज प्राप्ति के लिए गूलर स्थापन तथा गूलर धारण अधिक होगा अन्यथा पुष्पन अवस्था में 2.0% यूरिया अथवा 2.0% डी.ए.पी. का छिड़काव करें।
धुले	0	0	0	0	0	0	0	गूलर विकास अवस्था में 1.0% यूरिया और 1.0% मैग्नीशियम सल्फेट का छिड़काव करें। गूलर की सूँडी के प्रबंधन के लिए पायरेथाइड का प्रयोग न करें। परिशिष्ट में दी गई अनुशंसित पद्धति का अनुप्रयोग करें। जिन जिलों का प्रतिशत जहाँ जैसिड हानि आर्थिक हानि स्तर से ऊपर वे हैं- अकोला (70.30%) व जालना (61.95%)। जैसिड का प्रकोप जहां 10-30% गांवों में आर्थिक हानि सीमा से अधिक पाया गया वे हैं नांदेड (17.66%)। जिन क्षेत्रों में जैसिड प्रकोप 10% से कम रहा वे हैं- औरंगाबाद (7.45%), परभणी (7.23%), बीड (6.12%), यवतमाल (4.1%), हिंगोली (4.02%) तथा नागपुर(2.67%)। फूलकीट का प्रकोप अमरावती और जालना में नहीं के बराबर रहा। अमरावती जिले में सफेद मक्खी का प्रकोप आर्थिक हानि सीमा से अधिक 34.15% गांवों में पाया गया। धुले जिले में 50% से भी अधिक गांवों (56.25%) में लाल पत्ती रोग का प्रकोप रहा, उससे कम परभणी (47.23%) गांवों में, अहमदनगर (42.58% गांवों में), नागपुर (32.14% गांवों में), चन्द्रपुर (23.68%) गांवों में तथा गडचिरोली (18.18% गांवों में) दर्ज किया गया।
जलगांव	0	0	0	0	0	0	0	
जालना	0	0	0	0	0	0	0	
औरंगाबाद	0	0	0	0	0	0	0	
तेलंगाना								फसल फलन अवस्था में है। नत्र व पोटाश उर्वरकों की दूसरी व तीसरी विभाजित मात्रा आवश्यकतानुसार दें। 1-2% यूरिया अथवा 1-2% पोटेशियम नाइट्रेट जैसे पोषकों का छिड़काव करें। इसके साथ 1.0% मैग्नीशियम सल्फेट का प्रयोग भी करें। जैसिड, फूलकीट जैसे रसचूषक नाशीकीटों के नियंत्रण के लिए एसीफेट 1.5ग्रा./ली. अथवा फिप्रोनिल 2.0मिली./ली. की दर से छिड़काव करें। खेत में पानी जमा न हो पाए इसका ध्यान दें।
आदिलाबाद	0	0	0	0	0	0	4	<i>राइजोक्टोनिया</i> सडन की रोकथाम के लिए कॉपर आक्सीक्लोराइड @ 3.0ग्रा./ली. पानी की दर से पौधों के तने के पास तर करें। फफूंदजनित पत्ती धब्बा रोगों के नियंत्रण के लिए प्रोपिकोनजोल @ 1.0मिली./ली. अथवा मैकोजेब+कारबेन्डेजिम 2ग्रा./ली. के फसल पर छिड़काव की सिफारिश की जाती है। अधिक तापमान और अधिक आद्रता के कारण <i>स्पॉडोपटेरा</i> तथा चूषक कीटों की संख्या दर्ज की गई है। जैसिड तथा सफेदमक्खी के नियंत्रण के लिए परामर्शों के परिशिष्ट में दी गई सिफारिशों को काम में लाएँ। पायरेथाइडों का छिड़काव न करें।
कारिगर	10	4	0	0	0	3	4	
खम्मन	36	4	4	3	0	3	0	
करीमनगर	10	4	0	0	0	3	0	
नालगोंडा	36	5	4	3	0	6	5	
आंध्रप्रदेश								
गुन्टूर	46	0	6	4	0	8	4	
प्रकासम	46	9	8	11	13	31	22	
कर्नाटक								
धारवाड	11	7	11	5	8	28	5	पिछले सप्ताह उत्तरी कर्नाटक के कुछ भागों में एक दिन में 70मि.मी. से भी अधिक भारी वर्षा रिपोर्ट की गई है। इस स्थिति में फसल में जमा वर्षाजल की निकासी शीघ्र करें और फसल में 25 कि.ग्रा. यूरिया/एकड़ लगाएँ।
हवेली	13	16	16	12	8	7	7	रोगग्रस्त झडी हुई पत्तियों और कलियों को एकत्र करके फसल को साफ रखें और उस कचरे को जमीन में दबाकर नष्ट कर दें , अथवा जला दें। गुलाबी सूँडी का प्रबंधन फसल सुरक्षा के उचित उपायों द्वारा करें। देसी कपास में 30कि.ग्रा. यूरिया/एकड़ दें। फसल पर 19:19:19 घुलनशील उर्वरक 1.0% तथा 1.0% मैग्नीशियम सल्फेट और प्लानोफिक्स (5मिली/15ली. पानी की दर से) के साथ 15 दिनों के अंतराल पर दो छिड़काव करें। इससे लाल पत्ती रोग तथा कली झड़न कम होगा। मिरिड तथा मिज कीटों के प्रकोप के लिए फसल का निरीक्षण करते रहें। इनकी संख्या आर्थिक हानि स्तर पर पाए जाने पर विशिष्ट फसल संरक्षण उपायों को तुरन्त काम में लाए।
मैसूर	50	33	10	12	33	11	0	
तमिलनाडू								
पेरंबलुर	4	5	6	10	13	6	9	फसल वानस्पतिक अवस्था में है। फसल में खरपतवारों का प्रकोप देखा जा रहा है जिसके लिए उचित खरपतवारनाशक का छिड़काव करें। एफिड का प्रकोप आर्थिक हानि के अंदर ही दर्ज किया गया है। ताना घुन तथा जड़गलन के बचावात्मक उपाय के रूप में पौधों की जड़ों में
सेलम	11	14	9	39	45	17	21	क्लोरपायरिफास @750मिली./हे. के साथ बाविस्टिन @750ग्रा./हे. का पानी में घोल डालें। जैसिड , एफिड, सफेद मक्खी तथा फूलकीट जैसे रसचूषक कीटों का प्रकोप फसल में देखा जा रहा है। वर्षा से इन कीटों की
त्रिची	15	9	3	5	7	3	5	
विरडुनगर	22	12	13	40	37	11	11	

								संख्या नियंत्रण में रहेगी। अतः इनके नियंत्रण के उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। अगले सप्ताह आवश्यक होने पर इस परामर्श में रस चूसक कीटों से प्रबंधन के लिए दिए गए उपाय अपनाएं।
आदर्श वर्षा	< 5	5-20	20-50	50-80	> 80			
वर्षा मि.मी								

उत्तर भारत:

- फसल अंकुरण चरण (स्टेपलिंग स्टेज) में है।
- इस ऋतु वर्ष के लिए "सी आई सी आर और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों" द्वारा सिफारिश की गई कपास की जल्दी परिपक्व होने वाली बीटी संकर या अगती किस्में पर्ण कुंचन रोग (लीफ कर्ल वायरस रोग) के लिए प्रतिरोधी थे इस वर्ष के लिए भी उन्हीं किस्मों की सिफारिस की जाती है।
- कपास की देसी किस्में पर्ण कुंचन रोग के लिए प्रतिरोधी हैं अतः उत्तर भारत के लिए देसी उन्हीं को किस्मों की जोरदार सिफारिस की जाती है।
- फसल के अवशेषों और आकार में समान कपास के पौधों को नष्ट कर दिया जाना चाहिए।
- किसान को खरपतवार एवं इतसितके प्रबंधन करने की सलाह दी जाती है।
- थ्रिप्स कीटों का संक्रमण अंकुर स्तर (सीडलिंग स्टेज) पर हो सकता है, लेकिन शायद ही वे कभी आर्थिक नुकसान देते हैं चूसक कीट (थ्रिप्स) के संक्रामण की नियमित निगरानी किया जाना चाहिए।
- अनावश्यक कीटनाशक स्प्रे करने से बचें।

मध्य और दक्षिण भारत:

- गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और उड़ीसा के लिए 15 से 25 जून के बीच इस सीजन में बुवाई आदर्श
- दक्षिण भारत में बुवाई जुलाई से आगे नहीं बढ़ाया जाना चाहिए 15
- वर्षा आधारित क्षेत्रों विशेष रूप (बोरानी) से में उच्च घनत्व रोपण प्रणालियों में लकीरें पर बुवाई सबसे अच्छा माना गया है।
- वर्षा सिंचित क्षेत्रों में, बुआई 8 से 10 से. मी. वर्षा के बाद किया जाना चाहिए।
- बीटी कपास की संकर किस्मों को या जल्दी परिपक्व वाली किस्मों को प्राथमिकता देना चाहिए।
- वर्षा आधारित क्षेत्रों में संकर बीटी कपास 90 x 10 से. मी. दूरी पर बोना चाहिए है। इन किस्मों को उच्च घनत्व रोपण प्रणाली में

- गैर बीटी किस्मों-जैसे एके सूरज (सीईसीआर), एनएच 615 (वीएन-एमएयू) परभणी, एकेएच 081 (डॉ. पीडीकेव्ही अकोला), फुले धन्वन्तरी (एमपीकेव्ही राहुरी) जल्दी परिपक्व होते हैं। इसे जून 15 से पहले बोया जाता है तो फसल बालीवर्म एवं सूखा तनाव से बच जाएगा।
- कपासकेगैर बीटी किस्मों को उच्च घनत्व प्रणाली का उपयोग कर ब्राडयरिजोबियम जेपोनिकम से उपचरित करके सोयाबीन के बीज या लोबिया और कालाचना के साथ 45 सेमीपंक्ति से पंक्ति दूरी तथा सेमी पौधे सेदूरी।
- एक पर एक के बाद 10 पंक्ति पर अंतरफसल के रूप में भी लगाया जा सकता है।
- कपास के बीटी किस्मों को उच्च घनत्व प्रणाली का उपयोग कर ब्राडयरिजोबियम जेपोनिकम से उपचरित सोयाबीन के बीज या लोबिया और कालाचना की एक पंक्ति और कपास दो पंक्ति के साथ अंतरफसल के रूप में भी लगाया जा सकता है।
- कपास के खेतों की सीमा में या आसपास अरहर की 2-3पंक्तियाँरिफ्रयुजियाके रूप में सेवा करते हैं।
- वीडिसाइड स्टोम्प 30 ईसी या बेसलीन 45ईसी 2.5 lit/ हेक्टर के उपयोग खरपतवार के पूर्व उद्भवरोकने के लिए किया गया हो तो तुरंत हैरो करने से यह छिड़काव प्रभावी रहता है।
- पहली बारिश के बाद खेत खाद (फार्म यार्ड मेन्योर)या गोबर खाद 5से 10 टन प्रति हेक्टर खेतों में डालना चाहिए।
- एजोटोबेक्टर और पीएसबी दोनों का 25 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज में इस्तेमाल पोषकतत्वों के स्थिरीकरण के लिए किया जाना चाहिए।
- इमिडाक्लोप्रिड (8 ग्रा.), विटावेक्स या थिरम (3 ग्राम.) प्रति किलोग्राम बीज चूसक कीट एवं रोगोंके खिलाफ कपास की किस्मों की रक्षा करेगा।

भाकृअनुप-सीआईसीआर द्वारा सिफारिस की गयी प्रबंधन रणनीतियाँ:

नाशीकीट प्रबंधन

सामान्य सिफारिशें

ये करें:

- रसचूसक कीटों के लिए प्रतिरोधी किस्मों/संकरोंका चुनाव करें। रसचूसक कीटोंके लिए प्रतिरोधी बीटी संकरों पर कीटनाशकों के बहुत कम छिड़कावों की आवश्यकता होती है।
- रसचूसक कीटों के भक्षक कीटों को बढ़ावा देने के लिए लोबिया या ज्वार या उड़द या सायाबीन की अंतः फसल लें।
- इमिडेक्लोप्रिड @ 7 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज से बीजोंपचार करें।
- विशेषतः रसचूसक कीटों के लिए सवेदन किस्मों में नाइट्रोजन युक्त उर्वरकों का न्यूनतम उपयोग।
- फसल को खरपतवारों से मुक्त रखें और मिलिबग से ग्रस्त पौधों को धीरे- से उखाड़ कर नष्ट कर दें।
- बुवाई के 30-40 दिनों व 50-60 दिनों बाद फूलकीट , मिरीड बग और दूसरे रस चूसक कीटों के पर्यावरण हितैषी नियंत्रण के लिए इमिडेक्लोप्रिड, डाइमैथोएट या एसिफेट का पौधों के तने पर या पौधों के तने पास मिट्टी में अनुप्रयोग।

ये ना करें:

- फसल के पहले दो महीनों में मित्र कीटों के संरक्षण के लिए रासायनिक कीटनाशकों के छिड़काव को यथा संभव टालें। नैसर्गिक रूप से पाये जाने वाले लाभदायक कीट लेडी बर्ड बीटल, क्रायसोपर्ला, जीकोरिस बग, एफिलिनस उनके शिशु व प्रौढ़, सरफीड मक्खी, मिरीड बग, मकड़ियों आदि का संरक्षण होता है। ये मित्र कीट चेंपा, जेसिड, फूलकीट, मिरीड, सफेद मक्खी तथा मिली बग का कारगर तरीके से नियंत्रण करते हैं।
- लेपिडोप्टेरा आडर के कम हानिकारक नाशिकीटों जैसे पत्ती लपेटक साइलेप्टा डेरोगेटा व अर्धकुंडलक एनोमिस फ्लेवा के लिए फसल पर छिड़काव न करें। इन कीटों की इल्लियां कपास को बहुत कम नुकसान पहुंचाती है लेकिन ट्रायकोग्रामा प्रजाति, सिसिरोपा फोरमोसा, एपेंटेलिस प्रजाति जैसे परजीवियों के लिए परपोषी का काम करते हैं।
- भविष्य में चयन दबाव से बचने के लिए बीटी कपास पर बीटी कीटनाशक का छिड़काव ना करें।
- एसिटामीप्रिड, इमिडेक्लोप्रिड, क्लोथिएनिडिन व थायोमैथोक्शाम जैसे निओनिकोटिनाइड समूह के कीटनाशकों का फसल पर छिड़काव करने से बचें।
- डब्ल्यूएचओ वर्ग-1 श्रेणी (अति हानिकारक श्रेणी) के कीटनाशकों जैसे फोसफेमिडान, मिथाइल पैराथिओन फोरेट, मोनोक्रोटोफास, डाइक्लोरवास, कार्बोफ्यूरोन, मिथोमिल, ट्रिजोफोस, तथा मेटासिस्टोक्स का अनुप्रयोग ना करें।
- सफेद मक्खी के महाप्रकोप से बचने के लिए फिप्रोनिल तथा पायरेथ्रोइड जैसे कीटनाशकों के छिड़काव से बचें।

रसचूसक कीटों का प्रबंधन:

आर्थिक हानि सीमा (ईटीएल): यदि सफेद मक्खी तथा जेसिड की हानि का स्तर आर्थिक हानि सीमा ग्रेड अर्थात निचली पतियों के मुड़ने और सिकुड़ने तथा किनारों से पीले पड़ना आदि 25% या अधिक पौधों में दिखाई दे तो नीचे दिये गए नियंत्रण उपाय अपनाए:

- अ) नीम तेल 1.0 % + नीबोलीगिरी 5.0% + 0.05-0.1 डिटर्जेंट ।
- आ) वर्टीसीलियम लेकानी @ 10 ग्राम/ प्रति लीटर पानी; अच्छे सूत्रण विश्वसनीय निर्माताओं से ही खरीदें।
- इ) डाइफेन्थियूरोन (50 % 800 ग्राम / हे.)
- ई) फ्लोनिकोमिड 50% 200 ग्राम / हे. या
- उ) बुप्रोफेजीन 25% 200 ग्राम/ हे

पर्यावरण सुरक्षा, पारिस्थितिकी प्रभावकारिता और प्रतिरोध से संबंधित कारकों को ध्यान में रखते हुए कीटनाशक जैसे डाइमैथोएट या एसिफेट या इथिओन का भी इस्तेमाल सिर्फ विकल्प के रूप में किया जा सकता है।

यदि कलियों (स्क्वेयर) को मिरीड बग के प्रकोप का आर्थिक नुकसान दिखाई दे तो एसिफेट 75 एसपी या डाइमैथोएट @ एक ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

गूलर की सूंडियों का प्रबंधन:

गूलर की सूंडियों की नियंत्रण करने में बीटी कपास प्रभावी है।

गैर बीटी कपास के लिए निम्न रणनीति की सिफारिस की जा रही है: अमेरिकन सूँडी (हेलिकोवर्पा आर्मिजेरा) द्वारा 50% पौधों पर कलियाँ ग्रस्त होने पर इस आर्थिक हानि स्तर पर निम्न उपाय करें:

- 1) बीटी कपास के फसल पर एचएएनपीबी (HaNPB) का छिड़काव करें , इसके एक सप्ताह बाद 5% निबोली गिरी का छिड़काव करें या गूलर की सूँडियों स्पोजोप्टेरा (तम्बाखू की इल्ली) या सफेद मक्खी के नियन्त्रण के लिए आर्थिक हानि स्तर पर फोसलोन कीटनाशक का प्रयोग करें।
- 2) बुवाई के 70-80 दिनों बाद बीटी रहित कपास पर उपलब्ध होने पर ट्रायकोग्रामा का प्रयोग करें।
- 3) गूलर की सूँडियों , विशेष रूप से , हेलिकोवर्पा आर्मिजेरा नियन्त्रण के लिए प्रभावी कीटनाशक निम्न है:

क) क्लोरेनट्रेनिलीप्रोल (कोरजेन)

ख) फ्लुबेनडाइमाइड (फेम)

ग) स्पीनोसेड

घ) इमामेक्टीन बेंजोएट तथा

ङ) इंडोक्साकार्ब

ये कीटनाशक लक्षित नाशीकीटों के लिए चयनित अति विषैले हैं जबकि कपास पारिस्थिकीतंत्र में लाभदायक कीटों के लिए कम विषैले हैं। ये कीटनाशक पर्यावरण हितैषी कीटनाशक प्रतिरोधिता प्रबंधन कार्यक्रम के लिए उपयुक्त हैं।

- 4) गुलाबी सूँडी और चित्तिदार सूँडी : इनके लिए आर्थिक हानि सीमा है - 10 हरे गुलरों में एक जीवित सूँडी मिलने पर या लगातार तीन रातों में 8 पतंग (किट) प्रति ट्रेप प्रति रात पकड़ में आने पर; क्विनोलाफास 25 इसी या का 2 मिली प्रति लीटर पानी की दर से या थायोडिकार्ब 75 डब्लू पी (WP) का या कोई पाइरेथ्रोइड का फसल पर छिड़काव करें।
- 5) स्पोजोप्टेरा लिटुरा: इस इल्ले के अंड पुंजों को हाथ से एकत्र करें या एसएनपीवी का 500 एल ई/हे. अथवा रिमोन 10 एल ई का 200 मिली अथवा लार्विन 75 डब्लू पी 250 ग्राम पाउडर 250 लीटर पानी प्रति एकड़ छिड़काव करें।
- 6) प्ररोह घुन के नुकसान को कम करने के लिए प्रोफेनोफास 50 ई सी का 2 मिली प्रति लीटर पानी की दर एसआर फसल पर छिड़काव करें।
- 7) अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में घोंघे का प्रकोप: प्रलोभक मेटेल्डीहाइड 2% (स्नेल किल) 12.5 कि. ग्रा./हे. की दर से घोंघों के छिपने की जगह पर प्रयोग करें , मेढों फसल के चारों ओर उन जगहों पर डालें जहां इनका नुकसान दिखायी दे।

रोग प्रबंधन:

नवीन मुरझान (पैराविल्ट) मुरझान/जड़ गलन:

कुछ खेतों में सूखा के बाद वर्षा होने या सिंचाई करने पर इसके लक्षण फसल में दिखायी देते हैं। प्रभावित पौधों पर मुरझान के लक्षण दिखायी देने के कुछ घंटों में ही कोबाल्ट क्लोराइड 10 मि. ग्रा. प्रति लीटर पानी की दर (पीपीएम) से छिड़काव करे या प्रभावित पौधों की जड़ों में कापर-आक्सी-क्लोराइड 25 ग्रा. तथा यूरिया 200 ग्राम या कार्बेडजिम 1 ग्रा./लीटर की दर से 10 लीटर पानी लेकर मिट्टी को तर करें।

गूलर सड़न: साधारणतः प्रारम्भिक विकसित पौधे के निचले हिस्से के गूलर बादलों के मौसम या लगातार रिमझिम बारिस होते रहने की स्थिति में गूलर सड़ जाता है। मैकोजेब 75 डब्लूपी + क्लोरो थेलोनिल 70 डब्लूपी प्रत्येक 2 ग्राम पाउडर प्रति लीटर पानी की दर से ले कर फसल पर छिड़काव करें। अच्छा पराभव लाने के लिए सिल्वेट 99 के 10 ग्राम या 10 ग्राम ट्राइटन 50 मिली 100 लीटर पानी की दर से मिलाए।

एल्टरनेरिया अंगमारी : मैकोजेब 25 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से फसल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव क्रेन।

माइरोथेसियम पत्ती धब्बा रोग और जीवाणु झुलसा: स्टेप्टोसाइक्लीन सल्फेट (15-20 ग्रा./हे.) + कापरआक्सीक्लोराइड (1500-2000 ग्रा./हे.) 200-250 लीटर पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें।

खरपतवार प्रबंधन:

छोटे खरपटवारों पर खरपतवारनाशक अधिक प्रभावी होते हैं।

खरपतवार उगने के बाद प्रयोग में आने वाले खरपतवारनाशक(50 से 75 ग्रा. सक्रिय तत्व प्रति है. की दर से)

घासों : क्वीजेलोपोफ- इथाइल या फेनोक्सप्रोप-इथाइल या फ्लूएजीफोप-ब्यूटाइल का छिड़काव।

नरकर और घासों: प्रोपेक्विजाफोप-इथाइल का छिड़काव करें।

चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार: पाइरोथियोबेक सोडियम का छिड़काव करें।

खरपटवारों उगने पर खरपतवारनाशकों से उनका समयबद्ध एवं प्रभावी नियंत्रण होता है। खरपतवारनाशी (हर्बीसाइड) नवजात खरपटवारों (10-15 दिनों आयु से कम) पर अधिक प्रभावी एवं कारगर होते हैं। घासकुल के खरपटवारों के नियंत्रण के लिए क्लोजर्डलोफोप-इथाइल, फेनोक्सप्रोप सोडियम, फ्लुयाजीफोप ब्यूटाइल, का प्रयोग कर सकते हैं। नरकर और घासों के लिए पायरिथोबेक ईथाइल हैं और चौड़ी पत्तीवाले खरपटवारों के लिए पायरीओथिबेक सोडियम कारगर है। अधिक जानकारी के लिए कृषि विश्वविद्यालयों ए तकनीकी विशेषज्ञों से विचार विमर्श कर सकते हैं।

जलजमाव (वाटर लागिंग)

प्रबंधन:

जलमग्नता प्रबंधन:

कपास की फसल अधिक पानी के लिए संवेदनशील है अधिक वर्षा के कारण देश के मध्य और दक्षिणी क्षेत्रों में जल मग्नता एक समस्या बन सकती है । गहरी काली मृदाओं और पानी की अच्छी निकासी न होने की स्थिति में कपास की फसल जेल जमाव से सबसे ज्यादा दुष्प्रभावित होती है। अधिक वर्षा वाली परिस्थितियों में पानी की निकासी के लिए विशेषतः काली मिट्टी वाली खेत में ढलान के साथ साथ पर्याप्त नालियाँ बनाए । बेहतर मृदा नमी संरक्षण के लिए विशेषतः जिन क्षेत्रों में मिमी वर्षा होती है उन क्षेत्रों मई मेढ बनाने वाले यंत्र या 900-700 रिजर की सहायता से मेढ व नाली बनाए । इस तकनीक और मेढों पर कपास की बुवाई करने से वर्षा जल का संरक्षण होगा और अतिरिक्त जल खेत से बाहर निकाल जाएगा । यह तकनीक भारी काली मिट्टी में और अधिक वर्षा वाले क्षेत्र में उपयुक्त है।

खेत के किनारों पर जल निकासी के लिए नालियां बनाए। इससे अतिरिक्त पानी खेत से बाहर निकल सकेगा। नाली-मेढ पद्धति (रिजेज) में मेढ के ऊपर तुरंत बुवाई करने की सिफारिस की जाती है। इस पद्धति के उपयोग से भारी वर्षा का फसल पर दुष्प्रभाव नहीं होगा । जलमग्नता से यदि फसल पीली पड़ जाएतो उर्वरकोंका अनुप्रयोग करें। यदि भारी वर्षा की भविष्यवाणी की गई है तो उर्वरकों का अनुप्रयोग टाल दें जिससे सतह पर से उर्वरक बह जाने वाले नुकसान से बचा जा सके।

जलमग्नता के दुष्प्रभाव से फसल को जल्दी उबारने के लिए साप्ताहिक अंतराल में फसल पर 0.5 से 1.0 % डीपीए अथवा 19:19:19: नाइट्रोजन का घुलनशील योग छिड़काव करें।

सामान्य फसल स्वस्थ्य प्रबंधन :

1) स्थूल व सूक्ष्मपोषकतत्वों का प्रबंधन बेहतर करें।

मे ग्नेशियम सल्फेट %0.5, यूरिया %2का फसल पर छिड़काव करें। इसके बाद %2डीपीए का छिड़काव क्राय -1 एसी की उचित अभिव्यक्ति तथा लालपत्ती रोग में कमी लाना सुनिश्चित करने के लिए इनका फसल पर छिड़काव करें। मुरझान रोग की प्रारम्भिक अवस्था में तुरंत 1 % कोबाल्ट क्लोराइड का छिड़काव तथा बाबिस्टीन 1 % घोल से पौधों की जड़ के पास की जमीन को तर करने से क्षति पूर्ति हो सकती है।

2) लालपत्ती की रोक थाम के लिए 2 % यूरिया, 0.5 % जिंक सल्फेट तथा 2% बोरान का 15 दिनों के अंतराल में छिड़काव फसल के 90 दिनों के होने पर करें।

3) कली और फूलों के धारण के लिए : प्लानोफिक्स 4.5 एसएल (एनएए) हार्मोन @ 21 पीपीएम (7 एमएल प्रति 15 लीटर पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें।

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

वैज्ञानिक	पता		
डॉ. के.आर. क्रांति	निदेशक,केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)		
डॉ. ए. एच. प्रकाश	प्रधान वैज्ञानिक, एवं प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर (तमिलनाडु)		
डॉ. डी. मोंगा	प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र, सिरसा (हरियाणा)		
डॉ. एस. बी. सिंह	प्रधान, फसल सुधार विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)		
डॉ. संध्या क्रांति	प्रधान, फसल संरक्षण विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)		
डॉ. ब्लेज डी-सूजा	प्रधान, फसल उत्पादन विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)		
डॉ. इसाबेला अग्रवाल	वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर (तमिलनाडु)		
श्री एम. सवेस	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर (तमिलनाडु)		
डॉ. एन अनुराधा	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)		
प्रभारी वैज्ञानिक, मौसम विज्ञान विभाग (एआईसीएसटीआईपी केंद्र)			
वैज्ञानिक		मोबाइल नं.	ईमेल
डॉ. पंकज राठोर	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, फरीदकोट (पंजाब)	09464051995	pankaj@pau.edu
डॉ. (श्रीमति) सुनीत पंधर	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, फरीदकोट (पंजाब)	009814513681	suneet@pau.edu

डॉ. संजीव कुमार कटारिया	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, आरआरएस, भटिंडा (पंजाब)		k.sanieev@pau.edu
डॉ. जगदीश बेनीवाल	सीसीएस-हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार-124004 (हरियाणा)	09416325420	cotton@hau.ernet.in
डॉ. ऋषिकुमार	सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र, सिरसा (हरियाणा)	09729106299	Rishipareek70@yahoo.in
डॉ. रूप सिंह मीना	स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान	09413024080	rsmeenars@gmail.com
डॉ. बी.एस. नायक	उड़ीसा-कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर-751003 (उड़ीसा)	09437321675	bsnayak2007@rediffmail.com
डॉ. गोफाल्डू	नवासारी कृषि विश्वविद्यालय, नवासारी-396450 (गुजरात)	09662532645	girishfaldu@rediffmail.com
डॉ. ऐ. एन. पसलवार	पंजाब राव देशमुख कृषि विद्यापीठ, अकोला-440104 (महाराष्ट्र)	09822220272	adinathpaslawar@rediffmail.com
अरविंद डी. पंडागले	मराठवाडा कृषि विद्यापीठ, नांदेड (महाराष्ट्र)	07588581713	arvindpandegale@yahoo.co.in
डॉ. सतीश परसाई	आर.वी.एस. कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर-472002 (म.प्र.)	09406677601	aiccipkhandwa@gmail.com
डॉ. एस. भारती	आचार्य एन जी रंगा कृषि विश्वविद्यालय, एलएएम गुंटूर (आंध्रप्रदेश)	0949072341	bharathi_says@yahoo.com
डॉ. अलादिकट्टी	धारवाड कृषि विश्वविद्यालय, धारवाड (कर्नाटक)	09448861040	yaladakatti@rediffmail.com
डॉ. एम. वाय. अजयकुमार	धारवाड कृषि विश्वविद्यालय, धारवाड (कर्नाटक)	09880398690	dr.my.ajay@gmail.com
डॉ. एस. सोमासुंदरम	तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय कोयंबटूर (तमिलनाडु)	09965948419	rainfed@yahoo.com
डॉ. एम. गुनसेकरण	तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कपास अनुसंधान संस्थान, श्रीविल्लीपुथुर (तमिलनाडु)	09443631359	gunasekaran.pbg@gmail.com

हिन्दी संस्करण:

डॉ. उल्हास नन्दनकर,
मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं
प्रभारी, हिन्दी अनुभाग,
केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
uanandankar@gmail.com